# प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य में सन् 1950 ई॰ के आसपास एक बदलाव, एक नयापन दिखाई पड़ता है, जो आधुनिक परिवेश की देन है। आज़ादी के बाद नयी स्थितियाँ उभरकर आयीं जिनका प्रभाव मानव जीवन के हर हिस्से पर दिखाई देने लगा। सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों में व्याप्त ये उभरते परिवर्तन स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में भी दिखाई पड़ते हैं। नई कहानी परिवर्तित होते सामाजिक जीवन यथार्थ और मानवीय संवेदना की भरपूर पहचान में समर्थ रही है। इस यथार्थ के संप्रेषण में निर्मल वर्मा जैसी सृजनात्मक प्रतिभा की अपनी अलग पहचान है। क्योंकि उन्होंने आधुनिक मनुष्य की त्रासद स्थिति के बहुआयामी संदर्भों को अपनी रचना में उभारने का प्रयत्न किया है।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद और अज्ञेय के बाद यदि लीक से हटकर कोई नाम उभरता है तो वह निर्मल वर्मा का है जिन्होंने आधुनिक हिन्दी कहानी की विकास यात्रा में महत्पूर्ण पड़ाव तय किए हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में निर्मल वर्मा के कृतित्व का गौरव अक्षुण्ण है। उनकी रचनाओं की महत्पूर्ण विशेषता यह है कि आधुनिक जीवन की बदलती हुई रूप-रेखा को परिनिष्ठित रूप में और सूक्ष्मांकनों के साथ प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने हिन्दी में पहली बार मानव अस्तित्व के मूल में स्थित प्रश्न पाठकों के सामने उठाए हैं।

नई कहानी आंदोलन के आरंभकर्ताओं में निर्मल वर्मा पहले कहानीकार रहे। व्यक्ति के अकेलेपन, अजनबीपन, आत्मनिर्वासन की त्रासदियों की संघर्षशीलता

आदि समस्याओं को अपनी कहानियों में मूल विषय के रूप में चुनने के कारण निर्मल वर्मा नए कहानीकारों के बीच अलग से पहचाने जाते हैं। निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य का संवेदना आधुनिक भारतीय समाज की संवेदना ही है। उनका कथा-साहित्य आधुनिकता से ओतप्रोत है।

आधुनिक युग की विवशता, हार, लाचारी, चीख, व्यर्थता, भेद-भाव, बेगानापन, अनिश्चितता, घुटन, बेरोज़गारी, निराशा, टूटते संबंध, भय, सेक्स आदि विभिन्न आयाम उनके कथा-साहित्य में परिलक्षित होते हैं। निर्मल वर्मा की कहानियाँ मानव मन की जटिलताओं, समाज की जटिलताओं और मानवीय रिश्तों के रहस्य की कहानियाँ हैं। आधुनिक जीवन में व्याप्त मूल्यों का विघटन, संयुक्त परिवार की टूटन, संबंधों में उदासीनता, तीसरे व्यक्ति के आगमन से दुखमय दांपत्य जीवन, जीवन की विकृतियाँ, नैतिकता के बंधनों का त्याग, नए उभरते मानवीय संबंध आदि आधुनिक प्रवृत्तियाँ निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में देखने को मिलती हैं।

अतः कहा जा सकता है कि आज के युग में व्याप्त आधुनिकता बोध के प्रायः सभी लक्षण निर्मल वर्मा के संपूर्ण कथा-साहित्य में विद्यमान है। इसलिए उन्की रचनाओं का जितना भी विश्लेषण हुआ हो, फिर भी अनेक अछूते एवं अनदेखे पहलू अवश्य शेष रह जाते हैं। अतः निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में व्याप्त आधुनिकता बोध को पूर्णतः समझना तथा उनकी रचनाओं की थाह को पकड़ पाना आसान कार्य नहीं है। मेरा यह शोध प्रबन्ध - 'निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध' इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है - प्रथम अध्याय का शीर्षक है - 'निर्मल वर्मा का व्यक्तित्व निर्माण और रचना संसार'। इस अध्याय में निर्मल वर्मा का व्यक्ति परिचय, सर्जनात्मक मनोभूमिका का निर्माण, उनके लेखन में इतिहास और स्मृति के प्रभाव पर विवेचन किया गया है। साथ ही उनके रचना संसार, प्राप्त सम्मान तथा पुरस्कार आदि का भी इस अध्याय में परिचय दिया गया है।

इस शोध प्रबन्ध का दूसरा अध्याय है - 'जीवन परिवेश और सर्जनात्मकता'। इस अध्याय में कथाकार निर्मल वर्मा के लिखने के प्रेरणा स्रोत, उनकी रचनात्मक ऊर्जा के स्रोत, भारतीय जीवन सन्दर्भ से जुड़ाव, प्रवासी जीवन और सर्जनात्मकता, निर्मल वर्मा की साहित्य संबधी अवधारणाएँ आदि पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय है - 'आधुनिकता बोध की अवधारणा'। हिन्दी साहित्य के परिवर्तित सदंर्भों में आधुनिकता की प्रक्रिया और प्रकृति को समझने के लिए आधुनिकता बोध को समझने की ज़रूरत है। इस अध्याय में आधुनिकता बोध की अवधारणा, आधुनिकता और आधुनिकता बोध के बीच का अंतर, विश्व स्तर पर आधुनिकता बोध का आगमन, द्वितीय विश्व महायुद्ध के सन्दर्भ में आधुनिकता के परिवर्तित भाव-बोध, जीवन के विविध आयामों से जुड़ता आधुनिकता बोध और साहित्य के वातायन से आधुनिकता बोध का अध्ययन आदि के विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

चौथा अध्याय है - 'निर्मल वर्मा की कहानियों में आधुनिकता बोध'। इस अध्याय में निर्मल वर्मा की कहानियों को आधुनिकता बोध के परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास हुआ है। आधुनिकता बोध की प्रक्रिया जैसे- पारिवारिक संबधों की टूटन, अकेलेपन, अजनबीपन, अस्तित्वबोध, प्रेम संबध, मृत्यु बोध, जिजीविषा, महानगरीय परिवेश, वैयक्तिक स्वातंत्र्य आदि पहलू निर्मल वर्मा की कहानियों के मुख्य विषय रहे हैं। इन पहलुओं को केंद्र में रख कर निर्मल वर्मा की कहानियों के विस्तार से विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

पाँचवें अध्याय का शीर्षक है - 'निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता बोध'। इस अध्याय में निर्मल वर्मा के उपन्यासों का विश्लेषण आधुनिकता बोध के संदर्भ में किया गया है। इस संदर्भ में उनके उपन्यासों में आधुनिकता बोध के विभिन्न आयामों को खोजने का प्रयास हुआ है।

अंत में 'उपसंहार' है, जिसमें निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध निर्मला कालेज, मुवाटुपुषा के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. सी. विश्वनाथन जी के निर्देशन में आरभं हुआ। लेकिन सबसे दुख की बात है कि इस शोध कार्य की समाप्ति के पहले ही डॉ. सी. विश्वनाथन जी का आकस्मिक निधन हो गया। आज जब यह शोध कार्य शोध प्रबंध के रूप में आकार ग्रहण कर रहा है तो प्रसन्नता के नीचे दुख की एक अंतरधारा बहती महसूस हो रही है कि इस अवसर पर आदरणीय विश्वनाथन जी नहीं हैं। शोध समर्पण के अवसर पर मैं सर्वप्रथम स्वर्गीय विश्वनाथन जी की स्मृति के समक्ष नतमस्तक होता हूँ।

डॉ. सी. विश्वनाथन जी के निधन के उपरान्त मेरे निवेदन को स्वीकार करते हुए इस शोध प्रबंध के निर्देशन का भार निर्मला कालेज, मुवाटुपुषा के हिन्दी विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. जेम्स जोर्ज ने अपने ऊपर लेकर मुझ पर बड़ी कृपा की। उनके स्नेहपूर्ण प्रोत्साहन से ही यह शोध प्रबंध विलम्ब के बिना रूप ग्रहण कर सका। उनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन एंव अपरिमित स्नेह के लिए मैं ह्रदय से अपना आभार प्रकट करता हूँ।

अपने इस शोध कार्य की सफलता के लिए श्री शंकरा कालेज - कालडी, निर्मला कालेज- मुवाटुपुषा, श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय- कालडी, कोच्चिन विश्वविद्यालय, केरल विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों और वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली की साहयता अत्यतं महत्वपूर्ण रही है। इन सभी संस्थाओं के अधिकारियों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। श्री शंकरा कालेज, कालडी के हिन्दी विभाग के सभी प्राध्यापकों ने समय समय पर बहुमूल्य सुझावों द्वारा मुझे लाभान्वित किया हैं।

कृतज्ञता सहित स्मरण कर रहा हूँ अपने अध्यापकों, मित्रों एवं बन्धुजनों को, जो मेरे इस प्रयत्न को सफल बनाने के लिए मदद करते रहे।

सविनय

हिन्दी विभाग
निर्मला कालेज, मुवाटुपुषा

**सुरेश ए.**

19 मार्च 2015